Saarth
E-Journal of Research

ISSNNO:2395-339X

गरीबी उन्मूलन एवं विकास वृद्धि

डॉ0 मधु प्रभा तिवारी
एसो0 प्रो0 अर्थशास्त्र
कालपी कॉलेज, (कालपी

शोध सारांश

गरीबी या निर्धनता जीवन जीने के साधनों या इस हेतु धन के अभाव की स्थिति है। "गरीबी उन वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति का अभाव है जो व्यक्ति तथा उसके परिवार के स्वास्थ्य और कुशलता को बनाये रखने में आवश्यक है।" इस प्रकार केवल भोजन, वस्त्र और आवास के प्रबन्ध से ही निर्धनता की समस्या समाप्त नहीं हो जाती. बल्कि व्यक्तियों के लिए ऐसी वस्तुएँ भी प्राप्त होना आवश्यक है जिससे स्वास्थ्य और कुशलता का एक सामान्य स्तर बनाये रखा जा सके।

मुख्य शब्द – गरीबी का अर्थ और परिभाषा, भारत में गरीबी, भारत में गरीबी के कारण, गरीबी को दूर करने के उपाय।

सार

गरीबी का अर्थ और परिभाषा

सामान्य रूप से एक व्यक्ति को न्यूनतम जीवनस्तर को बनाये रखने के लिए जितनी आय की आवश्यकता है, उससे कम आय होने पर उसे गरीब माना जाता है अर्थात् जिस व्यक्ति की आय अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं जैसे खाना, वस्त्र, मकान, चिकित्सा आदि की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं है, वह व्यक्ति गरीब कहलाता है। इसका मुख्य कारण आय–सृजक सम्पत्तियों व रोजगार के अवसरों की कमी है।

परिभाषा

गिलिन और गिलिन के अनुसार, ''निर्धनता वह दशा है जिसमें एक व्यक्ति या तो अपर्याप्त आय अथवा मूर्खतापूर्ण व्यय के कारण अपने जीवन स्तर को उतना ऊँचा नहीं रख पाता, जिससे उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता बनी रह सके और उसको तथा उस पर आश्रितों को अपने समाज के स्तरों के अनुसार उपयोगी ढंग से कार्य करने के योग्य बनाए रख सके।

गोडार्ड के अनुसार, ''निर्धनता उन वस्तुओं की अपर्याप्त पूर्ति की दशा है, जिसकी एक व्यक्ति को अपने स्वयं तथा अपने आश्रितों के स्वस्थ एवं शक्ति को बनाए रखने के लिए अवश्य होती है।

एडम स्मिथ के अनुसार, ''मनुष्य की अमीरी तथा गरीबी को मानव जीवन की आवश्यक वस्तुओं, आराम व मनोरंजन के साधनों की प्राप्त मात्रा से आका जा सकता है।''

वीवर के अनुसार, ''निर्धनता एक ऐसे जीवन स्तर के रूप में परिभाषित की जा सकती है, जिसमें स्वास्थ्य और शरीर सम्बन्धी दक्षता नहीं बनी रहती।''

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन के प्रथम निदेशक लॉर्ड बॉयड ओर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 1945 में गरीबी रेखा की अवधारणा प्रस्तुत की थी। उन्होंने 2300 कैलोरी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन से कम उपभोग करने वाले व्यक्ति को गरीब माना।

निर्धनता अनुपात – निर्धन व्यक्तियों का कुल जनसंख्या से अनुपात निर्धनता अनुपात कहलाता है।

निर्धनता अनुपात का सूत्र – देश में निर्धन व्यक्तियों की कुल संख्या/देश की कुल जनसंख्या

गरीबी के मापन हेतु नीति आयोग ने विभिन्न समूहों व समितियों दृ टास्क समूह, 1962, डॉ. वाई.के. अलघ समिति 1977, डी.टी. लकड़वाला टास्क समूह 1989, तेंदुलकर समिति 2005 का गठन किया।

गरीबी के प्रकार

गरीबी दो प्रकार की होती है –

सापेक्ष गरीबी/तुलनात्मक गरीबी

निरपेक्ष गरीबी/संपूर्ण गरीबी

सापेक्ष गरीबी क्या है

सापेक्ष गरीबी आय में पाई जाने वाली असमानता को प्रकट करती है। सापेक्ष गरीबी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक असमानता अथवा क्षेत्रीय आर्थिक असमानता का बोध कराती है। दूसरे शब्दों में, विभिन्न वर्गों विभिन्न प्रदेशों अथवा विभिन्न देशों की तुलनात्मक आय का प्रदर्शन सापेक्ष गरीबी का बोध कराता है यदि कहा जाए कि भारत में प्रति व्यक्ति आय अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय से कम है तब यह सापेक्ष गरीबी दर्शाने वाला कथन है। सापेक्ष गरीबी का मापन विकसित देशों में किया जाता है। सापेक्ष गरीबी को तुलनात्मक गरीबी कहते है।

सापेक्ष गरीबी का मापन दो विधियों से किया जाता है –

लॉरेन्ज वक्र विधि

गिनी गुणांक विधि।

निरपेक्ष गरीबी क्या है

निरपेक्ष गरीबी देश की उस जनसंख्या को सूचित करती है जो न्यूनतम उपभोग स्तर नहीं प्राप्त कर पाती और गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती है। निरपेक्ष गरीबी का मापन कैलोरी के आधार, उपभोग व्यय के आधार पर या उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आधार पर किया जा सकता है। निरपेक्ष गरीबी को संपूर्ण गरीबी कहते है। विकासशील देशों में निरपेक्ष गरीबी होती है।

भारत में नीति आयोग ने गरीबी की निरपेक्ष अवधारणा पर बल दिया है। भारत में निर्धनता की सामान्य स्वीकृत परिभाषाएँ उचित जीवन स्तर की अपेक्षा न्यूनतम जीवन स्तर को प्राप्त करने पर बल देती है। योजना आयोग ने गरीबी रेखा का आधार कैलोरी ऊर्जा को माना है।

Saarth
E-Journal of Research

ISSNNO:2395-339X

भारत में गरीबी के कारण

1. उचित शिक्षा का अभाव

गरीब लोगों के लिये शिक्षा की व्यवस्था करने के लिये सरकारें अपने विभिन्न प्रकार के विद्यालय चलाती हैं। सभी लोग शिक्षा की इस सरकारी व्यवस्था के बारे में जानते हैं। इसी कारण से उचित प्रकार की शिक्षा गरीबों को मिल नहीं पाती है।

शिक्षा के अभाव में गरीब लोग जिन्दगी में मिलने वाले मौके नही भुना पाते हैं और न ही कोई नया मौका खुद बना पाते हैं। उनको ये पता ही नहीं चलता कि किस तरह से एक या दो पीढ़ी में गरीब अपनी गरीबी के कुचक्र को तोड़ सकते हैं।

कुछ गरीब शिक्षा को महत्वहीन मानते हैं। वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय उनसे काम करवा कर परिवार की आमदनी बढ़ाना पसंद करते हैं।

ये बात कुछ हद तक कम गरीब और निम्म मध्यम वर्ग के लोगों के लिये भी लागू होती है। ये लोग प्रारम्भिक और आगे की शिक्षा तो पा जाते हैं लेकिन विशेषज्ञता वाली शिक्षा जो कि या तो सरकारी सरकारी क्षेत्र में सीमित है या फिर बहुत ही मंहगी है। कई प्रकार के आगे बढ़ने के अवसर उचित शिक्षा के अभाव में लोगों के हाथ से निकल जाते हैं।

2. स्वास्थ्य में बहुत खर्च होना

अधिकांश गरीबों का रहन सहन ऐसी जगहों पर होता है जो कि बहुत स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छी नहीं होती हैं। ऐसे में आये दिन कुछ न कुछ बामारी लगी रहती है जिससे रोजाना की आय तो जाती ही जाती है बल्कि आय का बहुत बड़ा हिस्सा मेडिकल के खर्चे में चला जाता है।

अल्प आय वर्ग और मध्यम वर्ग भी स्वास्थ्य में बहुत होने वाले खर्चे की वजह से अस्पतालों के बिल चुकाते चुकाते कब गरीबी में बहुंच जाते हैं पता ही नहीं चलता है। इन वर्ग के लोगों को तो खास तौर पर अपने अच्छे स्वास्थ्य के लिये सतर्क रहना चाहिये।

हमने अपने जीवन में बहुत सारे मध्यम वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य समस्याओं में बहुत खर्चा होने का कारण लोन लेते हुये देखा है। जिससे फिर से रहन सहन का स्तर नीचे आ जाता है।

नये गरीब बनने में उचित दर पर अच्छी स्वास्थ्य सेवायें न मिलना और अपने स्वास्थ्य को लेकर लोगों की लपरवाही बहुत बड़ा कारण है।

3. शराब की लत

बहुत से लोग शराब की लत के कारण अपना पैसा और स्वास्थ्य गंवा रहे हैं। बहुत सारे लोगों को शराब के कारण अल्प आयु में ही मौत के आगोश में जाते देखा है।

चाहे शराब पीकर कोई अपराध करना हो, कहीं कोई दुर्घटना में चोटिल होना हो या मौत हो जानी हो या फिर स्वयं शराब के कारण खराब स्वास्थ्य के कारण कोई ढंग का काम न करना या फिर लिवर की खराबी के कारण मौत होना हो, हर हाल में लोगों का बहुत सारा पैसा खर्च होता है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

जिस पैसे ले लोग अपना जीवन स्तर सुधार सकते हैं, उस पैसे को शराब के उपर खर्च करके लोग वापस वहीं वापस आ जाते हैं जहां से गरीबी के खिलाफ संघर्ष आरम्भ होता है। शराब को लेकर समाज अब आमतौर पर शराब के ही साथ है। कोई भी शराब के दुष्परिणामों पर बात नहीं करना चाहता है।

शराब अब लोगों के जीवन का हिस्सा बनकर उनकी आय और आयु दोनो को चाट रही है। अब तो महिलायें भी शराब पीने में पूरूषों का पूरी तरह साथ दे रही हैं।

4. सरकारी योजनायें भी लोगों को गरीब बना रही हैं

भारत की केन्द्रीय सरकार हो या फिर राज्यों की सरकारें, सब गरीबों के लिये दम भरते हैं और गरीबों के लिये कई कल्याणकारी योजनाओं को चलाते रहते हैं। इन सब योजनाओं से थोड़ा बहुत लाभ गरीबों का होता है और बहुत सारा फायदा बीच के दलालों, सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और नेताओं को होता है।

इन योजनाओ को चलाने के लिये अनेक कंपनियां, स्वयं सेवी संस्थायें और कर्मचारी लगते हैं और वे ही इसके वास्तविक लाभार्थी बनते हैं।

दूसरी तरफ गरीब लोगों के लिये जो ये कल्याणकारी योजनायें चलती हैं इनमें गरीबों को गरीब ही रहने का पुरस्कार मिलता है। अधिकांश सरकारी गरीबी को योजनाओं मे गरीब के किसी न किसी पैमाने के अन्दर होने के कारण लाभार्थियों को तरह तरह की राशन, घर, पढ़ाई इत्यादि की सुविधायें मिलती हैं।

अगर कोई गरीब अपनी मेहनत से गरीबी के पैमाने से ऊपर आ गया तो उसको मिलने वाली सारी सुविधायें बंद हो जाती हैं। गरीबी के पैमाने से उपर आने पर भी गरीब आदमी कोई अमीर व्यक्ति नहीं बन जाता है। लेकिन सरकार उसकी फ्री मिलने वाली सुविधायें बन्द कर देती है। इसलिये भी गरीब अपने आप को गरीब बनाये रखने में ठीक महसूस करता है।

दूसरी बात ये कि जब सब कुछ सरकार दे ही रही है तो गरीब लोग सोचते हैं फिर गरीबी से उपर उठ कर मेहनत कर के कमाने की व्यवस्था करने से क्या फायदा?

क्या आपने कोई ऐसी सरकारी योजना देखी है जो लोगों से कहती हो कि यदि आप अपनी मेहनत और सरकारी सहायता से अपनी गरीबी से निकल कर कम से कम अल्प आय वर्ग में आ जाओगे तो आपको कई प्रकार की विशेष सुविधायें मिलेंगी? नहीं न।

5. गलत सरकारी नीतियां

भारत की धरती जिस पर भगवान ने इतने प्राकृतिक संसाधन जिसमें लंबे मैदानी क्षेत्र, नदियां, जिनमें एक अच्छी जलवायु और ढेर सारे प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं, दिये हैं कि अगर ढंग से सरकारी नीतियां रहें तो ये देश वापस प्राचीन काल की तरह सोने की चिड़िया बन सकता है।

फिर भी सवाल यह है कि आज़ादी के 74 साल बाद भी भारत एक बेहद गरीब देश क्यों है? दरअसल भारत में मेहनत करके गरीबी से ऊपर आने को कभी प्रोत्साहित नहीं किया गया। लोगों को उत्पादकता के कामों में लगने के बजाय केवल नौकरी करने को ही रोजगार का माध्यम बना दिया।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

सरकारों ने सोशलिस्ट समाजवादी नीतियां बना कर ऐसे श्रम कानून और नीतियां बनाईं कि लोगों के लिये मेहनत करके अपना काम करना मुश्किल हो गया।

इस दौरान अच्छे पढ़े लिखे लोग उचित अवसरों की तलाश में भारत से बाहर जाते रहे। मानव संपदा जो कि भारत को आगे लो जाती वो दूसरे देशों के विकास में काम आती रही।

भारत में अधिकांश लोगों खास कर व्यवसायीओं पर इतने प्रकार के टैक्स (कर) लगा दिये गये कि लोग कर बचाने के लिये बड़े पैमाने पर काला धन बनाने लगे। और इस प्रकार जो धन भारत में लगता और देश को आगे ले जाता वो विदेशी बैंकों में जमा होने लगा।

इस प्रकार भारत की सरकारी नीतियों के कारण भी लोग गरीब होते जाते हैं। हालांकि अब सरकारें नींद से जागी हैं और अपनी नीतियों में परिवर्तन कर रही हैं।

6. सामाजिक परिस्थितियां

भारत में गरीबी का बहुत बड़ा कारण सामजिक परिस्थितियां और सामाजिक रूप से विभेद भी है। सामाजिक विभेद को तो राजनैतिक रूप से भारत में विभिन्न स्वरूपों में के आरक्षण और गरीबी हटाओ योजनाओं के द्वारा दूर किया गया है। लेकिन सामाजिक स्थितियों पर अभी भी कुछ नहीं किया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल सामाजिक आधार आज तक भी पुरानी सामाजिक संस्थाएं तथा रूढ़ियां हैं। यह वर्तमान समय के अनुकूल नहीं है। ये संस्थाएं हैं – जातिप्रथा, संयुक्त परिवार प्रथा और उत्तराधिकार के नियम आदि। ये सभी भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से होने वाले परिवर्तनों में बाधा उपस्थित करते हैं।

चाहे तड़क भड़क भरी शादी में होने वाला खर्चा हो, शादी में दिये जाना वाला दहेज हो, मृत्यु भोज हो या फिर आये दिन आने वाले तीज–त्यौहार हों, सब पर समाज में अपना मुंह दिखाने और अपनी हैसियत बताने के नाम पर बहुत खर्चा होता है।

बहुत से लोगों को तो हमने इन सब खर्चों के लिये लोन लेते हुये देखा है। गरीबी का कुचक्र इसी प्रकार के खर्चों के कारण बना रहता है।

इन खर्चों में मध्यम आय वर्ग भी शामिल है। मध्यम आय वर्ग में तो आजकल अपनी सामाजिक हैसियत में दिखावा करने के लिये अपनी क्षमता से ज्यादा खर्च करके बच्चों को मंहगी शिक्षा, कार खरीदना, विदेश यात्रा करना इत्यादि भी शामिल हो गये हैं।

उधार चुकाते चकाते अपनी मेहनत की कमाई लोग ऐसे ही कामों मे लगा देते हैं और गरीबी में आ जाते हैं।

7. बढ़ती मंहगाई

बुनियादी वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतें भी गरीबी का एक प्रमुख कारण हैं। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्ति के लिए जीवित रहना ही एक चुनौती है। भारत में गरीबी का एक अन्य कारण जाति व्यवस्था और आय के संसाधनों का असमान वितरण भी है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

इसके अलावा पूरे दिन मेहनत करने वाले अकुशल कारीगरों की आय भी बहुत कम है। असंगठित क्षेत्र की एक सबसे बड़ी समस्या है कि मालिकों को उनके मजदूरों की कम आय और खराब जीवन शैली की कोई परवाह नहीं है। उनकी चिंता सिर्फ लागत में कटौती और अधिक से अधिक लाभ कमाना है।

उपलब्ध नौकरियों की संख्या के मुकाबले नौकरी की तलाश करने वालों की संख्या अधिक होने के कारण अकुशल कारीगरों को कम पैसों में काम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है।

सरकार को इन अकुशल कारीगरों के लिए न्यूनतम मजदूरी के मानक बनाने चाहिये। इसके साथ ही सरकार को यह भी निश्चित करना चाहिये कि इनका पालन ठीक तरह से हो।

8. भारत की बढ़ती जनसंख्या

भारत में गरीबी का एक बड़ा कारण बढ़ती जनसंख्या है। इससे निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य सुविधाएं और वित्तीय संसाधानों की कमी भी बढ़ती जाती है। इसके अलावा उच्च जनसंख्या दर से प्रति व्यक्ति आय भी प्रभावित होती है और प्रति व्यक्ति आय घटती है।

एक अनुमान के अनुसार के भारत भारत पूरी दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बनने की ओर अग्रसर है। भारत की आबादी जिस रफ्तार से बढ़ रही है उस रफ्तार से भारत की अर्थव्यवस्था नहीं बढ़ रही है। अब तो भारत की सड़कों पर बढ़ती हुई जनसंख्या महसूस होने लगी है।

भारत में जनसंख्या इस गति से बढ़ रही है कि कुल उत्पादन बढ़ने पर प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में अधिक धन नहीं हो पाता, जिससे जीवन–स्तर ऊंचा नहीं हो पाता। इसी वजह से बेराजगारी बढ़ती है।

बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाने के लिये कठोर कदम उठाने का समय आ गया है ताकि गरीबी को भी काबू में किया जा सके

9. प्राकृतिक आपदायें

भारत में गरीबी के अनेक कारणों में से एक भारत के विभिन्न भागों में किसी न किसी समय आने वाली प्राकृतिक आपदायें भी कहीं न कहीं दोषी हैं। कहीं अत्यधिक ठंड का मौसम रहता और वर्ष के अधिकांश समय बर्फ रहती है, कहीं ज्यादा बारिश से बाढ़ रहती है, कहीं सूखा रहता, कहीं जमीन रेगिस्तानी है, कहीं जंगल हैं। कभी कभी भूकम्प भी आ जाता है।

इन सब प्राकृतिक कारणों से बड़ी जनसंख्या प्रभावित होती है। जब काम करने का मौका प्राकृतिक आपदाओं की वजह से चला जाता है तो लोगों की आय भी गिर जाती हैं अतः गरीबी बनी रहती है।

10. प्रेरणा की कमी – गरीबी का महिमा मंडन

जैसा कि हमने ऊपर क्रम संख्या 4 में भी बताया था कि गरीबी उन्मूलन के फार्मूले में काम करने के प्रोत्साहन के अभाव की भी है। गरीब को सहज ही भोजन मिल जाए, तो श्रम करने की रुचि नहीं रह जाती है। लोगों को सरकारी योजनाओं की वजह से काफी वस्तुयें निशुल्क मिल रही हैं जिससे उनकी श्रम करने की चाहत समाप्त हो गई है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

यदि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रकार निष्क्रिय हो जाएगा, तो फिर उनका उत्थान तो नहीं हो पायेगा।

इन कारणों से बढ़ती असमानता के साथ गरीबी उन्मूलन हो जाए, तो भी वह सफल नहीं होगा। हमारे सामने विकट समस्या उपलब्ध है, विकास की प्रक्रिया में असमानता में वृद्धि होती ही है।

इसके अलावा समाजवादी सोशलिस्ट सोच के कारणों से भारत के राजनैतिक दलों ने और साहित्यकारों, महात्माओं व फिल्मों ने भी गरीबी का महिमा मंडन ही किया है। लोगों को ये ही बताया गया कि पैसे वाले और उद्योगपति चोर और बेईमान होते हैं, वे गरीबों का खून चूस कर अमीर बने हैं, गरीब ईमानदार होते हैं इत्यादि ही बताया गया है।

किसी ने भी गरीबों का आव्हान नहीं किया कि गरीबी के चक्र को तोड़ो। इसलिये लोगों को कोई भी इच्छा नहीं होती है कि गरीबी से बाहर निकलें।

भारत में गरीबी को दूर करने के उपाय

(क) जनसंख्या पर नियंत्रण–गरीबी को दूर करने के लिए जनसंख्या नियंत्रण अति आवश्यक है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए परिवार नियोजन एक महत्वपूर्ण उपाय है। यह अति आवश्यक है कि लोगों को परिवार नियोजन उपायों के बारे में शिक्षित करके जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाए।

(ख) उत्पादन में वृद्धि – गरीबी की समस्या का वास्तविक हल यह है कि सभी प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाया जाए। कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए भूमि सुधार किए जाएं, उन्नत बीज, रासायनिक खाद, उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग और सिंचाई के साधनों की सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए। इसी प्रकार औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए उत्पादन की आधुनिक विधियों को अपनाना चाहिए तथा देश में कुटीर एवं लघु उद्योगों को विकास करना चाहिए, ताकि शीघ्र उत्पादन बढ़ने के साथ–साथ रोजगार के अवसर निकल सकें।

(ग) आय का समान वितरण गरीबी निवारण के लिए देश में आय और संपत्तित का समान वितरण होना चाहिए। आय की असमानताओं का प्रमुख कारण लोगों को कार्य करने के समान अवसरों का न मिलना है। अतः आय के समान वितरण के लिए गरीब व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। सरकार को अधिकतम आय की सीमा निर्धारित कर देनी चाहिए तथा न्यूनतम मजदूरी निश्चित कर देनी चाहिए। सरकार प्रगतिशील कर प्रणाली तथा सार्वजनिक व्यय नीति में अनुकूल परिवर्तन करके आय तथा धन की असमानताओं को कम करती है।

(घ) पूंजी निर्माण विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है। पूंजी निर्माण की दर को बढ़ाने के लिए देश में बचत और निवेश की दरों को बढ़ाना आवश्यक है।

इसके लिए आवश्यक है कि लोगों में फिजूलखर्ची की आदत को रोका जाए तथा निवेश के अधिक अवसर प्रदान किए जाए। पूजी निर्माण की दर बढ़ाने से आर्थिक विकास की दर तीव्र होगी, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी और देश की गरीबी दूर होगी।

(ङ) शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनः देश में शिक्षा का प्रसार करना चाहिए। शिक्षा का प्रसार करके जन जागृति लाई जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति को केवल विवकेशील ही नहीं बनाती, बल्कि व्यक्ति के दृ

Saarth
E-Journal of Research
ISSNNO:2395-339X

ष्टिकोण को भी व्यापक बनाती हैं। शिक्षित व्यक्तियों को आसानी से रोजगार मिल सकता है। वे अपनी आय के स्तर को बढ़ा सकते हैं तथा अन्त में उच्च रहन सहन का स्तर प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तनों की आवश्यकता है। शिक्षा रोजगार प्रेरक होनी चाहिए तथा उच्च शिक्षा केवल मेधावी छात्रों के लिए सुरक्षित होनी चाहिए।

(च) उपयुक्त वातावरण देश में से गरीबी दूर करने के लिए यह अति आवश्यक है कि सामाजिक वातावरण को आर्थिक विकास के अनुकूल बनाया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि लोगों को शिक्षित किया जाए। उनका दृष्टिकोण प्रगतिशील तथा वैज्ञानिक हो, जाति प्रथा के दोष, सामाजिक कुरीतिया अधविश्वास एवं रूढिवादिता दूर हो। यह भी आवश्यक है कि राजनीतिक, प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक व्यवस्थाएं आर्थिक विकास के अनुकूल हो ।

(छ) कीमत वृद्धि पर रोक– यदि कीमत वृद्धि का वर्तमान सिलसिला चलता रहा तो देश प्रतिदिन गरीब होता चला गया जाएगा। इसलिए बढ़ रही कीमतों पर तुरंत रोक लगाने की आवश्यकता है। इसके लिए काले धन पर रोक, कृषि तथा उपभोगता पदार्थों में वृद्धि, सार्वजनिक वितरण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाना, जमाखोरी और चोर बाजारी पर नियंत्रण किया जाना चाहिए।

(ज) रोज़गार में वृद्धि – गरीबी का मुख्य कारण बेरोजगारी है। ग्रामीण क्षेत्र में मौसमी बेरोजगारी को कम करने के लिए कुटीर तथा लघु उद्योगों में बेरोजगारी को कम करने के किए बहुफसलीय खेती को अपनाना चाहिए। शहरी क्षेत्रों में उद्योगों में बेरोज़गारी कम करने के लिए नए उद्योगों की स्थापना करने की आवश्यकता है। इसके लिए सस्ती साख सुविधाए प्रदान करनी चाहिए। शिक्षित बेरोजगारी कम करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल देना चाहिए। वास्तव में, शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके उसे व्यवसाय के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। इस प्रकार ग्रामीण तथा शहरी दोनो प्रकार की बेरोज़गारी को कम करके गरीबी को कम किया जा सकता है

(झ) अधिक निवेशः– भारत मे कुछ राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, इत्यादि में अधिक–से–अधिक निवेश करने की आवश्यकता है। इन राज्यों में विशेष सुविधाएं प्रदान करके प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को भी आकर्षित किया जा सकता है। इससे न केवल इन राज्यों में गरीबी का अनुपात कम होगा, अपितु देश का असंतुलन विकास भी होगा।

(ञ) उचित तकनीक का प्रयोग भारत में श्रम – प्रधान के स्थान पर पूजी प्रधान तकनीक का अधिक प्रयोग हो रहा है। इससे बेरोजगारी बढ़ने के साथ गरीबी भी बढ़ रही है। वास्तव में, भारत मे मध्यवर्ती तकनीक को अपनाना चाहिए। इससे अधिक श्रमिकों को रोजगार मिलेगा और गरीबी कम होगी तथा दूसरी ओर अधिक विकास भी होगा।

(ट) कार्यक्रमों को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू करना भारत सरकार द्वारा समय–समय पर गरीबी उन्मूलन के विभिन्न कार्यक्रम बनाए जाते है परंतु इन कार्यक्रमों को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू नहीं किया जाता। परिणामस्वरूप यह कार्यक्रम गरीब वर्ग तक नहीं पहुच पाते अर्थात गरीब वर्ग को विशेष लाभ नहीं होता। इसलिए गरीबी उन्मूलन के लिए सभी कार्यक्रमों को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू करने की आवश्यकता है।

(ठ) तीव्र आर्थिक विकास भारत में आर्थिक विकास की दर निम्न है। नौवीं योजना में आर्थिक विकास की दर 54 प्रतिशत रही। इस धीमी आर्थिक विकास दर के कारण ही गरीबी में वृद्धि हो रही है।

Saarth
E-Journal of Research

ISSNNO:2395-339X

निष्कर्ष :–

गरीबी देश के लिये बहुत बड़ी समस्या है। इसे ख़त्म करने के लिये युद्ध स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिये। हमारी सरकार देश के विकास के लिये कदम उठा रही है। गरीबी उन्मूलन अर्थव्यवस्था और समाज की एक सतत् और समावेशी वृद्धि सुनिश्चित करेगा। हम सभी को देश से गरीबी दूर करने हेतु किये जा रहे प्रयासों में हरसंभव मदद के लिये तैयार रहना चाहिये।

संदर्भ सूची

Prashad, Vijay. The Poorer Nations: A Possible History of the Global South. Verso Books, June 2014. ISBN 1781681589

Pressman, Steven, Poverty in America: an annotated bibliography. Metuchen, NJ: Scarecrow Press, 1994 ISBN 0810828332

Robinson, Marilynne, "Is Poverty Necessary? An idea that won't go away", Harper's Magazine, vol. 338, no. 2029 (June 2019), pp. 25–33. "To bring up the subject of providing a better life is to lean too far left, to flirt with socialism.... 'Why... do wages tend to a minimum which will give but a bare living?' A short answer would be: because they can.... Insofar as the public is barred from taking a central role in society, we lose wisdom to stealth, stupidity, parochialism."

Rothman, David J., (editor). The Almshouse Experience (Poverty U.S.A.: the Historical Record). New York: Arno Press, 1971. ISBN 0405030924Reprint of Report of the committee appointed by the Board of Guardians of the Poor of the City and Districts of Philadelphia to visit the cities of Baltimore, New York, Providence, Boston, and Salem (published in Philadelphia, 1827); Report of the Massachusetts General Court's Committee on Pauper Laws (published in [Boston?], 1821); and the 1824 Report of the New York Secretary of State on the relief and settlement of the poor (from the 24th annual report of the New York State Board of Charities, 1901).

Roy, Arundhati, Capitalism: A Ghost Story, Haymarket Books, 2014, ISBN 1608463850.

Sen, Amartya, Poverty and Famines: An Essay on Entitlement and Deprivation, Oxford, Clarendon Press, 1981.

Sen, Amartya, Development as Freedom, New York, Knopf, 1999.

Smeeding, Timothy M., O'Higgins, Michael & Rainwater, Lee. Poverty, Inequality and Income Distribution in Comparative Perspective. Urban Institute Press 1990.

Smith, Stephen C., Ending Global Poverty: a guide to what works, New York: Palgrave Macmillan, 2005

Triest, Robert K. (1998). "Has Poverty Gotten Worse?". Journal of Economic Perspectives. 12: 97–114. doi:10.1257/jep.12.1.97.

Wilson, Richard & Pickett, Kate. The Spirit Level, London: Allen Lane, 2009

Saarth E-Journal of Research

ISSNNO:2395-339X

World Bank: "Can South Asia End Poverty in a Generation?" Archived 15 April 2008 at the Wayback Machine

World Bank, "World Development Report 2004: Making Services Work For Poor People", 2004